शिक्किम

'सिक्किम' शब्द लिम्बू भाषा के शब्दों सु अर्थात 'नवीन' तथा ख्यिम अर्थात 'महल' अथवा 'घर' है। यह नाम प्रदेश के पहले राजा फुन्त्सोक नामग्याल के द्वारा बनाये गये महल का संकेतक है। तिब्बती भाषा में सिक्किम को 'चावल की घाटी' कहा जाता है।

सिक्किम या सिखिम भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित एक पर्वतीय राज्य है। अंगूठे के आकार का यह राज्य पश्चिम में नेपाल, उत्तर तथा पूर्व में चीनी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र तथा दक्षिण-पूर्व में भूटान से लगा हुआ है। भारत का पश्चिम बंगाल राज्य इसके दक्षिण में है। अंग्रेजी, ग़ोर्खा, खस, लेप्चा, भूटिया, लिंबू तथा हिन्दी आधिकारिक भाषाएँ हैं, परन्तु लिखने के व्यवहार में अंग्रेजी का ही उपयोग होता है। हिन्दू तथा बज्रयान (बौद्ध धर्म) सिक्किम के प्रमुख धर्म हैं। गंगटोक इसकी राजधानी है तथा यहाँ का सबसे बड़ा शहर है। सिक्किम ग्याल राजतन्त्र द्वारा शासित एक स्वतन्त्र राज्य था, परन्तु प्रशासनिक समस्यायों के चलते 1975 में एक जनमत-संग्रह के अनुसार भारत में विलय हो गया। उसी जनमत संग्रह के पश्चात राजतन्त्र का अन्त तथा भारतीय संविधान की नियम-प्रणाली के ढाचें में प्रजातन्त्र का उदय हुआ। सिक्किम की जनसंख्या भारत के राज्यों में सबसे कम तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से गोआ के पश्चात दूसरा स्थान है। अपने छोटे आकार के बावजूद सिक्किम भौगोलिक दृष्टि से काफ़ी विविधतापूर्ण है। कंचनजंघा जो कि दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी है यह सिक्किम के उत्तरी-पश्चिमी भाग में नेपाल की सीमा पर स्थित है। इस पर्वत चोटी को चको प्रदेश के कई भागो से आसानी से देखा जा सकता है। साफ-सुथरा, प्राकृतिक सुंदरता एवं राजनीतिक स्थिरता आदि विशेषताओं के होने के कारण सिक्किम भारत में पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है।

सिक्कम : भारत का राज्य

राजधानी	:	गंगटोक
सबसे बड़ा शहर	:	गंगटोक
जनसंख्या	:	6,10,577
जनसंख्या घनत्व	:	86 /किमी²
क्षेत्रफल	:	7,096 किमी²
ज़िले	:	4

राजभाषा :अंग्रेज़ी, भूटिया, गुरूङ,लेपचा, लिंबू, मगर,मुखिया, नेपालभाषा,राई, शेर्पा, तामाङ

गठन	:10 April 1975	
राज्यपाल	:	गंगा प्रसाद
मुख्यमंत्री	:	प्रेम सिंह तमांग
विधानमण्डल	:	एकसदनीयविधान सभा (32 सीटें)
भारतीय संसद	:राज्य सभा (1 सीट)	
	लोक सभा (1 सीट) –	
उच्च न्यायालय	:सिक्किम उच्च न्यायालय	
डाक सूचक संख्या	:	737
वाहन अक्षर	:	SK
आइएसओ	:	3166-2

शिक्किम का इतिहास

गुरु रिपोन्चे (नाम्ची स्तूप)

सिक्किम के संरक्षक सन्त गुरु रिन्पोचे की मूर्ति 188 फीट, विश्व में सबसे ऊँची मूर्ति है। बौद्ध भिक्षु गुरु रिन्पोचे (पद्मसंभव) का 8वीं सदी में सिक्किम दौरा इससे सम्बन्धित सबसे प्राचीन विवरण प्राप्त होता है। अभिलेखि से विदित होता है कि उन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार किया, सिक्किम को आशीर्वाद दिया तथा कुछ सदियों पश्चात प्रभाव में आने वाले राज्य की भविष्यवाणी की। मान्यता के अनुसार 14वीं सदी में ख्ये बुम्सा, पूर्वी तिब्बत में खाम के मिन्यक महल के एक राजकुमार को एक रात दैवीय दृष्टि के अनुसार दक्षिण की ओर जाने का आदेश मिला। इनके ही वंशजों ने सिक्किम में राजतन्त्र की स्थापना की। 1642 इस्वी में ख्ये के पाँचवें वंशज फुन्त्सोंग नामग्याल को तीन बौद्ध भिक्षु, जो उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण से आये थे। इनके द्वारा फुन्त्सोंग को सिक्किम का प्रथम चोग्याल (राजा) घोषित किया गया। इस प्रकार सिक्किम में राजतन्त्र का आरम्भ हुआ। फुन्त्सोंग नामग्याल के पुत्र, तेन्सुंग नामग्याल ने उनके पश्चात 1670 में कार्य-भार संभाला। तेन्सुंग ने राजधानी को युक्सोम से रबदेन्त्से स्थानान्तरित कर दिया। सन 1700 में भूटान में चोग्याल की अर्ध-बहन, जिसे राज-गद्दी से वंचित कर दिया गया था। इसने सिक्किम पर आक्रमण किया। तिब्बतियों की सहायता से चोग्याल को राज-गद्दी पुनः सौंप दी गयी। 1717 तथा 1733 के बीच सिक्किम को नेपाल तथा भूटान के अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा जिसके कारण रबदेन्त्से का अन्तत:पतन हो गया।

शिक्किम का इतिहास

शिक्किम का प्राचीन ध्वज

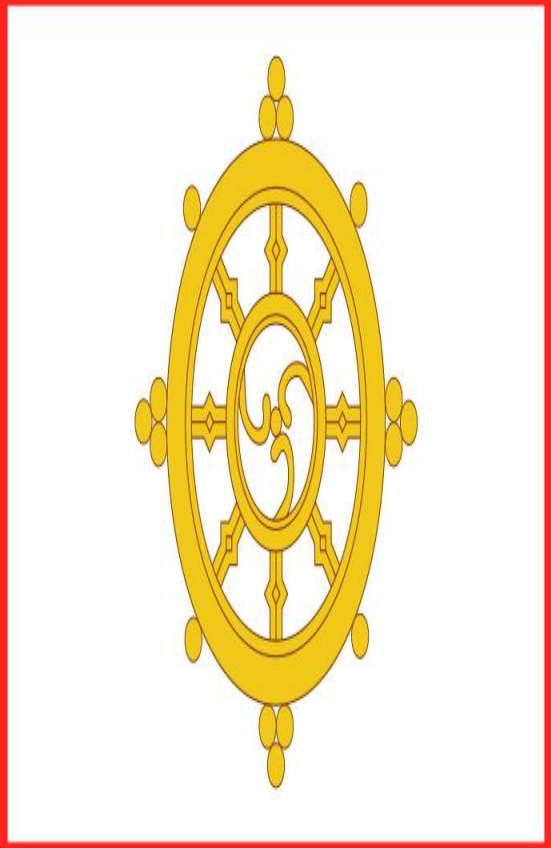

सन 1791 में चीन ने सिक्किम की मदद के लिये तथा तिब्बत को गोरखाओं से बचाने के लिये अपनी सेना भेजी थी। नेपाल की हार के पश्चात, सिक्किम किंग वंश का भाग बन गया। पड़ोसी देश भारत में ब्रिटिश राज आने के बाद सिक्किम ने अपने प्रमुख दुश्मन राष्ट्र नेपाल के विरुद्ध चीन से हाथ मिला लिया। नेपाल ने सिक्किम पर आक्रमण किया एवं तराई समेत काफी सारे क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। इसी कारण ईस्ट इंडिया कम्पनी ने नेपाल पर चढ़ाई की और परिणाम स्वरूप् 1814 में गोरखा युद्ध हुआ। सिक्किम और नेपाल के बीच हुई सुगौली संधि तथा सिक्किम और ब्रिटिश-भारत के बीच हुई तितालिया संधि के द्वारा नेपाल अधिकृत सिक्किमी क्षेत्र को वर्ष 1817 में लौटा दिया गया। यद्यपि, अंग्रेजों द्वारा मोरांग प्रदेश में कर लागू करने के कारण सिक्किम और अंग्रेजी शासन के बीच संबंधों में कड़वाहट आ गयी। वर्ष 1849 में दो अंग्रेज़ अफसर, सर जोसेफ डाल्टन और डाक्टर अर्चिबाल्ड कैम्पबेल उत्तरवर्ती (डाक्टर अर्चिबाल्ड) सिक्किम और ब्रिटिश सरकार के बीच बुरे संबंधों के लिए जिम्मेदार थे। ये बिना अनुमति अथवा सूचना के सिक्किम के पर्वतों में जा पहुंचे। जहाँ इन दोनों अफसरों को सिक्किम सरकार द्वारा बंदी बना लिया गया। नाराज ब्रिटिश शासन ने इस हिमालयी राज्य पर चढाई कर दी और इसे 1835 में भारत के साथ मिला लिया। इस चढाई के परिणाम स्वरूप चोग्याल ब्रिटिश गवर्नर के आधीन एक कठपुतली राजा बन कर रह गया।

शिक्किम का इतिहास

द्रुल चोर्तेन स्तूप

1947 में एक जनमत द्वारा सिक्किम का भारत में विलय को अस्वीकार कर दिया गया और तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने सिक्किम को संरक्षित राज्य का दर्जा प्रदान किया। इसके तहत भारत सिक्किम का संरक्षक हुआ। सिक्किम के विदेशी, राजनयिक अथवा सम्पर्क संबन्धी विषयों की ज़िम्मेदारी भारत ने संभाल ली।सन 1955 में एक राज्य परिषद् स्थापित की गई जिसके आधीन चोग्याल को एक संवैधानिक सरकार बनाने की अनुमति दी गई। इस दौरान सिक्किम नेशनल काँग्रेस द्वारा पुनः मतदान हुआ और नेपालियों को अधिक प्रतिनिधित्व की मांग के चलते राज्य में गडबडी की स्थिति पैदा हो गई। 1973 में राजभवन के सामने हुए दंगो के कारण शिक्किम ने भारत सरकार से सिक्किम को संरक्षण प्रदान करने के लिए औपचारिक अनुरोध किया गया। चोग्याल राजवंश सिक्किम में अत्यधिक अलोकप्रिय साबित हो रहा था। सिक्किम पूर्ण रूप से बाहरी दुनिया के लिये बंद था और बाह्य विश्व को सिक्किम के बारे मैं बहुत कम जानकारी थी। यद्यपि अमरीकन आरोहक गंगटोक के कुछ चित्र तथा अन्य कानूनी प्रलेख की तस्करी करने में सफल हुआ। इस प्रकार भारत की कार्यवाही विश्व के दृष्टि में आई। यद्यपि इतिहास लिखा जा चुका था और वास्तविक स्थिति विश्व को तब पता चला जब प्रधान मंत्री नें 1975 में भारतीय संसद से यह अनुरोध किया कि सिक्किम को भारत का एक राज्य स्वीकार कर उसे भारतीय संसद में प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए। अप्रैल 1975 में भारतीय सेना सिक्किम में प्रविष्ट हुई और राजमहल के पहरेदारों को निःशस्त्र करने के पश्चात गंगटोक को अपने कब्जे में ले लिया। दो दिनों के भीतर सम्पूर्ण सिक्किम राज्य भारत सरकार के नियंत्रण में था। सिक्किम को भारतीय गणराज्य मे सम्मिलित्त करने का अधिकार सिक्किम की 97.5 प्रतिशत जनता ने समर्थन किया। कुछ ही सप्ताह के उपरांत 16 मई 1975 मे सिक्किम औपचारिक रूप से भारतीय गणराज्य का 22 वां प्रदेश बना और सिक्किम मे राजशाही का अंत हुआ। सिक्किम सन 1642 में वजूद में आया, जब फुन्त्सोंग नाम्ग्याल को तीन बौद्ध भिक्षुओं ने सिक्किम का पहला चोग्याल(राजा) घोषित किया गया। इस तरह सिक्किम में राजतन्त्र की शुरूआत होने के बाद नाम्ग्याल राजवंश ने 333 सालों तक राज किया।

शिक्किम का इतिहास

शिक्किम विधानसभा

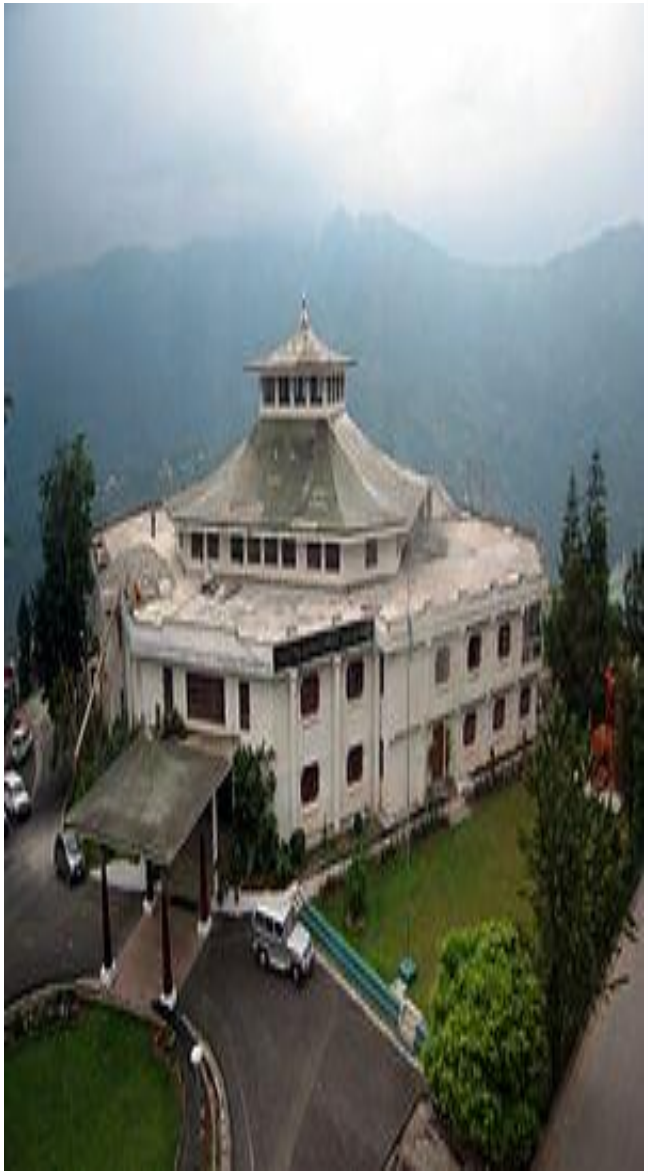

भारत ने 1947 में स्वाधीनता हासिल की। इसके बाद पूरे देश में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में अलग-अलग रियासतों का भारत में विलय किया गया। इसी क्रम में 6 अप्रैल, 1975 की सुबह सिक्किम के चोग्याल को अपने राजमहल के गेट के बाहर भारतीय सैनिकों के ट्रकों की आवाज़ सुनाई दी। भारतीय सेना ने राजमहल को चारों तरफ़ से घेर रखा था। सेना ने राजमहल पर मौजूद 243 गार्डों पर तुरंत काबू पा लिया और सिक्किम की आजादी का खात्मा हो गया। इसके बाद चोग्याल को उनके महल में ही नज़रबंद कर दिया गया। तत्पश्चात सिक्किम में जनमत संग्रह कराया गया। जनमत संग्रह में 97.5 फीसदी लोगों ने भारत के साथ जाने की इच्छा जताई। जिसके बाद सिक्किम को भारत का 22वां राज्य बनाने का 36वां संविधान संशोधन विधेयक 23 अप्रैल, 1975 को लोकसभा में पेश किया गया. उसी दिन इसे 299/11 के मत से पास कर दिया गया। वहीं राज्यसभा में यह बिल 26 अप्रैल को पास हुआ और 15 मई, 1975 को जैसे ही राष्ट्रपति फ़ख़रुद्दीन अली अहमद ने इस बिल पर हस्ताक्षर किए, नाम्ग्याल राजवंश का शासन समाप्त हो गया। वर्ष 2002 में चीन को एक बड़ी लज्जा का सामना तब करना पड़ा जब सत्रहवें कर्मापा उग्र्येंत्रिन्ले दोरजी, जिन्हें चीनी सरकार एक लामा घोषित कर चुकी थी, एक नाटकीय अंदाज में तिब्बत से भाग कर सिक्किम की रुम्तेक मठ में जा पहुंचे। चीनी अधिकारी इस धर्मसंकट मे जा फँसे कि इस बात का विरोध भारत सरकार से कैसे करें। भारत से विरोध करने का अर्थ यह निकलता है कि चीनी सरकार ने प्रत्यक्ष रूप से सिक्किम को भारत के अभिन्न अंग के रूप मे स्वीकार लिया है। चीनी सरकार की अभी तक सिक्किम पर औपचारिक स्थिति यह थी कि सिक्किम एक स्वतंत्र राज्य है, जिस पर भारत नें अधिक्रमण कर रखा है। चीन ने अंततः सिक्किम को 2003 में भारत के एक राज्य के रूप में स्वीकार किया जिससे भारत-चीन संबंधों में आयी कड़वाहट कुछ कम हुई। बदले में भारत नें तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग स्वीकार किया। भारत और चीन के बीच हुए एक महत्वपूर्ण समझौते के तहत चीन ने एक औपचारिक मानचित्र जारी किया जिसमें सिक्किम को स्पष्ट रूप मे भारत की सीमा रेखा के भीतर दिखाया गया। इस समझौते पर चीन के प्रधान मंत्री वेन जियाबाओ और भारत के प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ने हस्ताक्षर किया। 6 जुलाई 2006 को हिमालय के नाथुला दर्रे को सीमावर्ती व्यापार के लिए खोल दिया गया जिससे यह संकेत मिलता है इस क्षेत्र को लेकर दोनों देशों के बीच सौहार्द का भाव उत्पन्न हुआ है।

शिक्किम का भूगोल

शिक्किम का मानचित्र

सिक्किम के पश्चिम में हिमालय की चोटियाँ अंगूठे के आकार का सिक्किम पूरा पर्वतीय क्षेत्र है। विभिन्न स्थानों की ऊँचाई समुद्री तल से 280 मीटर (920 फीट) से 8585 मीटर (28,000 फीट) तक है। कंचनजंगा यहाँ की सबसे ऊंची चोटी है। प्रदेश का अधिकतर हिस्सा कृषि के लिये अनपयुक्त है। इसके बावजूद कुछ ढलान को खेतों में बदल दिया गया है और पहाड़ी तरीके से खेती की जाती है। बर्फ से निकली कई धारायें मौजूद होने की वजह से सिक्किम के दक्षिण और पश्चिम में नदियों की घाटियाँ बन गईं हैं। यह धारायें मिलकर तिस्ता एवं रंगीत बनाती हैं। तिस्ता को सिक्किम का जीवन रेखा भी कहा जाता है और यह सिक्किम के उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है। प्रदेश का एक तिहाई हिस्सा घने जंगलों से घिरा है। सिक्किम के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रंखला, उत्तर सिक्किम में स्थित गुरुडांगमार सरोवर हिमालय की ऊँची पर्वत श्रंखलाओं ने सिक्किम को उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं मे अर्धचन्द्राकार रूप में घेर रखा है। राज्य के अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र अधिकतर राज्य के दक्षिणी भाग में , हिमालय की कम ऊँचाई वाली श्रंखलाओं मे स्थित हैं। राज्य मे अट्ठाइस पर्वत चोटियाँ, इक्कीस हिमानी, दो सौ सत्ताईस झीलें (जिनमे चांगु झील, गुरुडोंग्मार झील और खेचियोपल्री) प्रमुख हैं। पाँच गर्म पानी के चश्मे और सौ से अधिक नदियाँ और नाले हैं। आठ पहाड़ी दर्रे हैं जो सिक्किम को तिब्बत, भूटान और नेपाल से जोड़ते हैं।

शिक्किम का भूगोल (उपविभाग)

सिक्किम के चार जनपद हैं। प्रत्येक जनपद (जिले) को केन्द्र अथवा राज्य सरकार द्वारा नियुक्त जिलाधिकारी देखता है। चीन की सीमा से लगे होने के कारण अधिकतर क्षेत्रों में भारतीय सेना का बाहुल्य दिखाई देता है। कई क्षेत्रों में प्रवेश निषेध है और लोगों को घूमने के लिये परमिट लेना पड़ता है। सिक्किम में कुल आठ कस्बे एवं नौ उप-विभाग हैं।ये चार जिले पूर्व सिक्किम, पश्चिम सिक्किम, उत्तरी सिक्किम एवं दक्षिणी सिक्किम हैं जिनकी राजधानियाँ क्रमश: गंगटोक, गेज़िंग, मंगन एवं नामची हैं। यह चार जिले पुन: विभिन्न उप-विभागों में बाँटे गये हैं। 'पकयोंग' पूर्वी जिले का, 'सोरेंग' पश्चिमी जिले का, 'चुंगथांग' उत्तरी जिले का और 'रावोंगला' दक्षिणी जिले का उपविभाग है।

शिक्किम की जनसंख्या

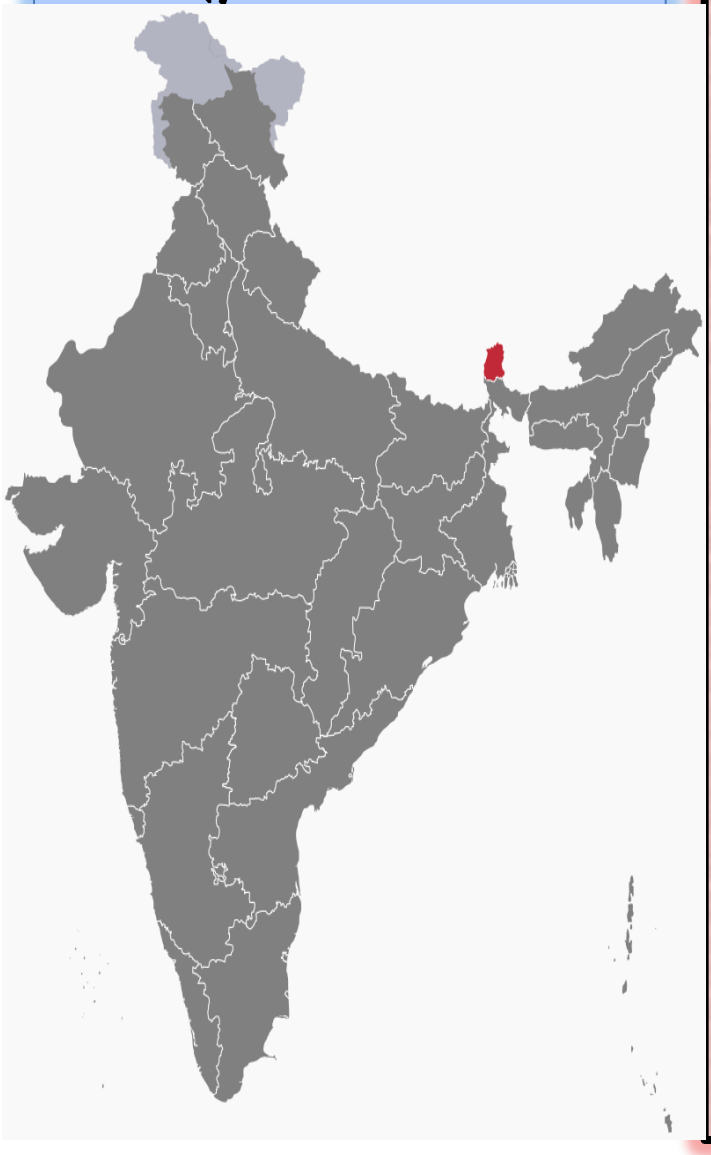

मानवजाति के रूप से सिक्किम के अधिकतर निवासी नेपाली हैं जिन्होंने प्रदेश में उन्नीसवीं सदी में प्रवेश किया था। भूटिया सिक्किम के मूल निवासियों में से एक हैं, जिन्होंने तिब्बत के खाम जिले से चौदहवीं सदी में पलायन किया था और लेप्चा, जो स्थानीय मान्यतानुसार सुदूर पूर्व से आये माने जाते हैं। प्रदेश के उत्तरी तथा पूर्वी इलाक़ों में तिब्बती बहुतायत में रहते हैं। अन्य राज्यों से आकर सिक्किम में बसने वालों में प्रमुख हैं मारवाड़ी लोग। मारवाड़ी, जो दक्षिण सिक्किम तथा गंगटोक में दुकानें चलाते हैं। बिहारी जो अधिकतर श्रमिक हैं; तथा बंगाली लोग। हिन्दू धर्म राज्य का प्रमुख धर्म है जिसके अनुयायी राज्य में 60.9% हैं। बौद्ध धर्म के अनुयायी 28.1% अल्पसंख्या में हैं। सिक्किम में ईसाइयों की 6.7% आबादी है जिनमे मूल रूप से अधिकतर वे लेपचा हैं जिन्होंने उन्नीसवीं सदी के उत्तरकाल में संयुक्त राजशाही अंग्रेज़ी धर्मोपदेशकों के प्रचार के बाद ईसाई मत अपनाया थ। राज्य में कभी साम्प्रदायिक तनाव नहीं रहा। मुसलमानों की आबादी 1.4% प्रतिशत गंगटोक के व्यापारिक क्षेत्र और मंगन मस्जिद मस्जिदें के आस-पास हैं।

नेपाली सिक्किम की प्रमुख भाषा है। सिक्किम में प्रायः अंग्रेज़ी और हिन्दी भी बोली और समझी जाती हैं। यहाँ की अन्य भाषाओं मे भूटिया, जोंखा, ग्रोमा, गुरुंग, लेप्चा, लिम्बु, मगर, माझी, मझवार, नेपालभाषा, दनुवार, शेर्पा, सुनवार, तामाङ, थुलुग, तिब्बती और याक्खा आदि भाषाएँ शामिल हैं।

5,40,493 की जनसंख्या के साथ सिक्किम भारत का न्यूनतम आबादी वाला राज्य है, जिसमें पुरुषों की संख्या 2,88,217 है और महिलाओं की संख्या 2,52,276 है। सिक्किम में जनसंख्या का घनत्व 76 मनुष्य प्रतिवर्ग किलोमीटर है पर भारत में न्यूनतम है। विकास दर 21.9% है। (31 मार्च 2012)। लिंगानुपात 889 स्त्री प्रति 1000 पुरुष है। 50,000 की आबादी के साथ गंगटोक सिक्किम का एकमात्र महत्तवपूर्ण शहर है। राज्य में शहरी आबादी लगभग 20% है।प्रति व्यक्ति आय 233954 वार्षिक है, जो कि पूर्वोत्तर के राज्यों में सर्वाधिक है।